Dr. Gautam Kumar
B.A(H) Part-I, Paper-II

गोखले का योगदान
(Contribution of Gokhale)

गोपाल कृष्ण गोखले का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचार देश के लिए वरदान से कम नहीं है। वे राजनीति में आदर्शवाद और यथार्थवाद के समन्वयक के रूप में हमारे समक्ष आते हैं। वही गोखले जन-सेवा को एक नैतिक और धार्मिक कर्तव्य मानते थे। गोखले उदारवादियों के शीर्षस्थ नेता थे। अर्थात् उदारवादी विचार धारा के वाहक थे। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, स्वशासन प्राप्ति, क्रमिक सुधार समेत विभिन्न विकास क्रम के चरणों में गोखले का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जो निम्न प्रकार से वर्णित है :-

(i) **एक श्रेष्ठ उदारवादी** - गोखले भारत में उदारवाद के प्रवर्तक थे। गोखले की मान्यता थी कि सरकारी नीतियों के प्रति असंतोष और विरोध की नीति में संवैधानिक साधनों में आस्था रखते हुए, इस माध्यम का प्रयोग करना चाहिए साथ ही शासकों को भी शासन के संचालन में जनहित का ख्याल रखना चाहिए। इस तरह उदारवाद गोखले के लिए एक आदर्श ही नहीं वरन् उसे व्यवहारिक रूप प्रदान करने हेतु एक कार्य-शैली का प्रतीक भी था। गोखले उदारवादी होने के कारण ब्रिटिश सरकार के समर्थक होते हुए भी एक देश-भक्त भी थे। वे ब्रिटिश शासकों के जन-विरोधी कार्यों के कटु आलोचक भी थे।

(ii) **राष्ट्रीय एकता के समर्थक** - गोखले एक राष्ट्र-भक्त व्यक्ति थे तथा राष्ट्र को हर समस्या पर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से चिंतन करते थे। हर राष्ट्रीय समस्या का समाधान ढूंढते थे ताकि राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ हो सके। वे हिन्दू और मुसलमानों के बीच पारस्परिक विश्वास और सौहार्दपूर्ण से एकता की भावना का विकास करना चाहते थे तथा उनका मानना था कि एकता होने पर स्वशासन के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। वे हिन्दू-मुसलमान एकता को राष्ट्रोत्थान के लिए अनिवार्य समझते थे। उन्होंने इस भावना के हृदय में राष्ट्रीयता की भावना विकसित करने पर बल दिया।

Scanned with CamScanner

(iii) सत्ता विकेन्द्रीकरण का समर्थन - गोरवाले सत्ता के विकेन्द्रीकरण में विश्वास रखते थे। वे सत्ता का विकेन्द्रीकरण ग्राम, जिला तथा प्रान्तीय स्तर पर ले जाना चाहते थे, ताकि शासन के संचालन में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी हो सके। गोरवाले ने सत्ता के विकेन्द्रीकरण की अपने समय में जो योजना प्रस्तुत की थी, वह आज भी भारत में "पंचायती राज" के संदर्भ में प्रासंगिक है। वे आजीवन इस दिशा में सक्रिय प्रयास करते रहे।

(iv) क्रमिक सुधारों में विश्वास - गोरवाले एक व्यवहारिक आदर्शवादी थे। उनका मानना था कि ब्रिटिश शासन से संवैधानिक संघर्षों के माध्यम से ही आवश्यक शासकीय - प्रशासकीय सुधारों के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि प्रशासनिक सुधार के लक्ष्य को धीरे-धीरे एवं क्रमबद्ध ढंग से प्राप्त करने का मार्ग ही उचित मार्ग है तथा उसका अनुसरण करने में ही भारत का हित है।

(v) संविधानवाद में विश्वास - गोरवाले अपनी उदारवादी मान्यताओं के कारण भारत के लिए स्वशासन की प्राप्ति हेतु शान्तिपूर्ण, अहिंसक तथा संवैधानिक साधनों के प्रयोग को ही उचित मानते थे। उदारवादी मान्यताओं के अनुसार, जनता के कष्ट के निवारण हेतु उनके द्वारा प्रयोग के तरीके संवैधानिक साधन थे, जिसमें प्रस्ताव पारित करना, शिष्ट-मंडल ले जाना, भाषण के माध्यम से जन-समस्याओं के प्रति शासकों का ध्यान आकर्षित करने, स्मरण-पत्र देना इत्यादि शामिल थे। गोरवाले ने शासन तंत्र के विरुद्ध युद्ध करने हेतु वैधानिक मार्ग का अनुसरण किया।

(vi) जन - कल्याणकारी कार्यों पर बल - गोरवाले किसी भी विषय पर सभी दृष्टिकोण से मंथन करते थे। गोरवाले ने जन-कल्याण कारी कार्यों पर विशेष बल दिया। गोरवाले के अनुसार में

Scanned with CamScanner

जो भारतीय स्वशासन का स्वरूप था, वह अनिवार्य रूप से एक कल्याणकारी राज्य का रूप था। वे प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से शनैः शनैः स्वशासित शासन को स्थापित कर, उसके माध्यम से लोक-कल्याणकारी राज्य की संकल्पना को साकार रूप प्रदान करना चाहते थे।

(vii) राजनीति का आध्यात्मिकरण - राजनीतिक चिंतन को गोखले की सबसे बड़ी और स्थाई देन "राजनीति का आध्यात्मिकरण" है। गोखले के अनुसार, श्रेष्ठ साध्य की प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ साधनों को ही अपनाया जाना चाहिए। गोखले अपने नैतिक-आदर्शों और सेवा भावना से प्रेरित होने के कारण सार्वजनिक जीवन में साध्य-साधन की पवित्रता पर बल दिया तथा पूरे बल और दृढ़ता के साथ राजनीति के आध्यात्मिकरण का प्रयास किया।

(viii) भारत सेवक समाज/संघ की स्थापना - गोखले ने भारत सेवक समाज/संघ की स्थापना की। जिसमें भारत के विभिन्न प्रान्तों के योग्य एवं शिक्षित व्यक्ति को शामिल कर, उन्हें देश के प्रति समर्पण की भावना/भाव को अपनाने हेतु प्रेरित किया गया। इसके माध्यम से वे देश-सेवकों की ऐसी टोली तैयार करना चाहते थे, जो देश सेवा के लिए अपना तन-मन-धन अर्पित कर सके।

(ix) एक सफल विचारक - गोखले सिर्फ एक महान उदारवादी नेता ही नहीं, एक सफल विचारक भी थे। इस दृष्टि से उनके चरित्र में तीन आधारभूत गुण - (i) सूक्ष्म परीक्षण (ii) सबल अभिव्यक्ति और (iii) आडम्बरहित विश्लेषण था। वे जनता के हितों को जिस प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत और अभिव्यक्त करते थे, उसका शासकों के पास कोई उत्तर नहीं होता था।

Scanned with CamScanner